गृह कार्य
वर्ग– चार
हिन्दी

1. उचित मात्रा लगाकर शब्द बनाइए।

   क. परब – ख. कबतर – ग. कयल – घ. लहगा – ड. अरण –

2. दिए गए संज्ञा शब्दों को उचित खानों में लिखिए।

पर्वत	हिमालय	महल	ताजमहल	मिठास	जावेद
बालक	चालाकी	बुढापा	घड़ी	हँसी	यमुना

जातिवाचक संज्ञा	व्यक्तिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा

3. इन शब्दों के स्त्रीलिंग रूप लिखिए।

   क. काका – ख. धोबी –

   ग. बकरा – घ. नौकर –

   ड. चिडा – च. पिता –

4. दिए गए शब्दों से बहुवचन रूप में लिखिए।

   क. बेटा – ख. चुहिया –

   ग. पुस्तक – घ. छात्रा –

   ड. पक्षी – च. मिठाई –

5. वाक्यांश के लिए एक शब्द लिखें–

   क. प्रतिदिन होने वाला –

   ख. वर्ष में एक बार होने वाला –

   ग. जिसके डर न लगें –

घ. चित्र बनाने वाला –

ड. सदा सच बोलने वाला –

6. विलोम शब्द – उल्टे अर्थ वाले शब्द विलोम शब्द या विपरीतार्थक शब्द कहलाते है। जैसे – अदंर–बाहर।

च. दिए गए शब्दों के विलोम शब्द लिखें–

क. अच्छा – ख. अमीर – ग. आषा –

घ. महँगा – ड. हार – च. धर्म –

7. समानार्थी शब्द – समान अर्थ वाले शब्द समानाथी शब्द कहलाते है। इन्हे पर्यायवाची शब्द भी कहा जाता है। जैसे – माता, जननी, अम्मा, अंबा।

च. पहाड़ – ....

छ. घर – ....

ज. आग – ....

झ. पृथ्वी – ....

प. रात – ....

8. मुहावरे – हिंदी में शब्दों के कुछ समूह सामान्य अर्थ न देकर विशेष अर्थ देते है। ऐसे शब्दों का समूह मुहावरा कहलाता है। जैसे – नौ दो ग्यारह हो जाना अर्थात् – भाग जाना।

वाक्य में प्रयोग – पुलिस को देखकर चोर नौ दो ग्यारह हो गया।

च. दिए गए मुहावरों के अर्थ लिखें और मुहावरों से वाक्य बनाए।

क. आँखों का तारा – अर्थ –

वाक्य में प्रयोग –

ख. उल्लू बनाना – अर्थ –

वाक्य में प्रयोग –

ग. नाक में दम करना – अर्थ –

वाक्य में प्रयोग –

घ. पेट में चूहे कूदना – अर्थ –

वाक्य में प्रयोग –

9. अपठित बोध – 'अपठित' का अर्थ होता है – जो पहले पढ़ा न गया हो। अपठित बोध में ऐसा अंश दिया होता है जिसे आपने पहले नहीं पढा। यह कहानी भी हो सकती है। इस अंश पर आधारित कुछ प्रश्न पुछे जाते है जिनका सटीक उत्तर कम–से–कम और अपने शब्दों में देना होता है।

च. दिए गए गद्यांश को पढ़िए–

होली एक पवित्र त्योहार है। यह ढ़ेर सारी खुशियाँ लेकर आता है। इस त्योहार में लोग गुलाल और रंगों से खेलते है। होली के अवसर पर बाजार में दुकानें तरह–तरह की पिचकारियों से सज जाती है। बच्चे और कुछ बड़े भी रंग डालने के लिए पिचकारियों का इस्तेमाल करते है। आजकल की पिचकारियाँ प्लास्टिक की बनी होती हैं जबकि पुराने जमाने में पिचकारियाँ भैंसो की बड़ी–बड़ी सींगों से बनाई जाती थी। बाद में खोखले बाँस के लंबे टुकड़ों से पिचकारियाँ बनाई जाने लगीं। कुछ वर्षो पहले तक पीतल की बनी पिचकारियाँ प्रचलन में थी। पिचकारियाँ चाहे किसी चीज की बनी हो, इनसे रंग डालने वालों का उत्साह देखते ही बनता है।

अब पूछे गए प्रष्नों के सही उत्तर चुनिए–

अ. बाजार में दुकानें कब पिचकारियों से सज जाती हैं ?

क. दीपावली के अवसर पर
ख. होली के अवसर पर
ग. दशहरे के अवसर पर

आ. पुराने जमाने में पिचकारियाँ बनाने में इस चीज का इस्तेमाल होता था ?

क. भैंस की सींग
ख. लोहा
ग. पीतल

इ. पिचकारियों का इस्तेमाल इस काम के लिए होता है –

क. रंग डालने के लिए
ख. गुलाल डालने के लिए
ग. कीचड़ डालने के लिए

ई. यह शब्द विशेषण नहीं है–

क. खोखला ख. पुराना ग. पीतल

10. निबंध – 'समय के महत्व पर' या मेरा प्रिय त्योहार पर निबंध लिखें।